सोहर

सोने के खड़उआँ राजा दशरथ, चटर चटर कर हो।
हेलनि, तोहरा के रानी बोलावेली, त रानी मोर उदासल हो ।।1।।
पइसी जगावेली हेलनिया, उठीं ना सिर साहेब हो।
साहेब, देखलीं निरबंसिया के मूँह, आजु रे दिन कइसन हो ।।2।।
अतना बचन राजा सुनलन, सुनहिं नाहिं पावेले हो।
राजा, गोड़ मुड़ तानेले चदरिया, सूतेले गजओबर हो ।।3।।
पइसी जगावेली कोसिला रानी, उठीं ना सिर साहेब हो।
साहेब, उठी के करीं ना दतुअनिया, त अवरू असननवा नू हो ।।4।।
कइसे के उठीं हम कोसिला रानी, हमरा बड़ा सोच बाटे हो।
आरे नीचहिं जात के हेलनिया, हमें निरबंसिया कहे हो ।।5।।
आरे कोसिला के भइले राजा रामचन्दर, सुमितरा के लछुमन हो।
आरे, केकई के भरत भुआल, तीनो रे घरे सोहर हो ।।6।।
ओबरी से बोलेली कोसिला रानी, सुनीं राजा दशरथ हो।
ए राजा, सोने के तिलरिया गढ़ाईं, हेलनिया पहिरावहु हो ।।7।।

अभ्यास

1. सोहर केकरा कहल जाला? पता करीं।
2. भोर पहर महल में काहे बधाई बाजे लागेला।
3. बच्चा के जनम के समय कवन-कवन जोगार के जरूरत पड़ेला?
4. एह गीत में उन्हन के जगहा कवन चीज के प्रयोग के वर्णन बा?
5. जनम के समय सम्पन्न होखे वाला विधि के संक्षेप में वर्णन करीं।

शब्द-भंडार

साँझहिं – साँझ के समय
भोरहिं – भोर के समय, सबेरे
बधइआ – खुशी के अवसर पर गावे वाला गीत
नहवाएब – स्नान कइल
पीतांबर – पीयर चादर
इजुरिया – विधि के समय अँजुरी में राखे वाला चावल
इजोरी – अँजुरी
भरायब – भरवाएब, भरे के संकल्प
हेलनिया – नौकरानी
तिलरिया – तीन लर के एगो हार